

[A-67]

No. of Printed Pages: 5

Sc

Sardar Patel University

M.A. Examination, 3th semester under CBCS

Tuesday, date: 28-4-2015, Time: 2:30 p.m. to 5:30 p.m.

PA03S GUJ03 Subject: Gujarati

Subject title: translation & editing (અનુવાદ અને સંપાદન) (Total marks: 70)

પ્રશ્ન: 1 સંપાદન એટલે શું? તે જણાવી સંપાદનના પ્રકાર જણાવો.

અથવા

આધુનિક ગુજરાતી નવલિકાનું સંપાદન કરવું હોય તો સંપાદકે કઈ પ્રક્રિયામાંથી પસાર થવું પડે તે જણાવો. (ગુણ : 18)

પ્રશ્ન: 2 અનુવાદના પ્રકારો જણાવી અનુવાદ પ્રક્રિયાની વર્તમાન સમયમાં શી ઉપયોગિતા છે? તે જણાવો. (ગુણ : 18)

અથવા

ટૂંક નોંધ લખો.

અ. અનુવાદકની સજ્જતા

બ. અનુવાદની સમસ્યા

પ્રશ્ન: 3 નીચેના ગદ્યખંડનો ગુજરાતીમાં અનુવાદ કરો. (ગુણ: 17)

There was once a very foolish man. He drove his family crazy with the stupid things he did and said.

One day, he climbed a tree to cut a branch. He sat at one end of the branch, and hacked away near the trunk. A tailor, who was passing by,

was surprised at the man's lack of common sense. He called out, Friend, if you cut the branch you are sitting on, you will fall down with it.'

The tailor shrugged his shoulders, and left the man to his fate. But he had walked only a short distance when he heard a yell of pain. The foolish man and the branch had, of course, come down together.

When the foolish man had recovered from the shock of falling, he dusted himself down and ran after the tailor. He clutched the tailor's feet and said, 'O wise man, you know everything there is to know. You predicted I would fall, and I did fall.'

The tailor said, 'Friend, it was just common sense.' He tried to walk on.

But the foolish man went on clutching his feet. He said 'O wise one who can see the future, tell me when I am going to die.'

The tailor was becoming a little tired of this nonsense, so he said, 'Look, I will give you a thread from my shawl. When this thread breaks, you will die.'

Satisfied, the foolish man went home, keeping the thread safely in his hand.

One day some months later the thread, which was quite worn out because the foolish man kept checking its condition, broke. The man started crying loudly. His wife came to see what the problem was. 'I'm dead,' the man cried, 'I'm dead.'

अथवा

किसी धूर्त सांप ने एक मार्ग के पास देरा डाला और हर आने-जाने वाले को काटने लगा। एक बार एक साधु उधर से निकला। साधु को देखते ही सांप उसे

डसने के लिए दौड़ा। साधु ने उसे स्नेह से देखा और शांति से कहा, तुम मुझे काटना चाहते हो, है न? आओ, अपनी इच्छा पूरी करो।

साधु की अप्रत्याशित प्रतिक्रिया और सज्जनता से सांप अभिभूत हो गया। साधु ने कहा, मित्र, मुझे वचन दो कि आज से तुम किसी को नहीं काटोगे। सांप ने उसे प्रणाम किया और वचन दिया कि अब वह कभी किसी को नहीं काटेगा। साधु आगे बढ़ गया। सांप सीधा-सादा अहिंसक जीवन जीने लगा।

कुछ ही दिनों में सब जान गए कि अब इस सांप से डरने की कोई जरूरत नहीं है। बच्चे उसके साथ बहुत क्रूर व्यवहार करने लगे। वे उसे पत्थर मारते और पूंछ पकड़कर घसीटते। तमाम यातनाएं भुगतकर भी सांप ने साधु को दिया अपना वचन नहीं तोड़ा।

कुछ समय पश्चात साधु अपने नए शिष्य सांप से मिलने आया। उसका घायल और सूजा हुआ शरीर देखकर गुरु भीतर से हिल गया। उसने सांप से पूछा कि उसकी यह हालत कैसे हुई। सांप ने कमजोर आवाज में कहा, गुरुदेव, आपने मुझे काटने से मना किया, पर लोग बहुत क्रूर हैं।

साधु ने कहा, मैंने तुम्हें काटने के लिए मना किया था, फुफकारने के लिए नहीं।

प्रश्न :4 नीचेના પદ્યખંડનો ગુજરાતીમાં અનુવાદ કરો.

(ગુણ: 17)

बिजली चमकी, पानी गिरने का डर है
वे क्यों भागे जाते हैं जिनके घर हैं
वे क्यों चुप हैं जिनको आती है भाषा
वह क्या है जो दिखता है धुआँ-धुआँ-सा
वह क्या है हरा-हरा-सा जिसके आगे
हैं उलझ गये जीने के सारे धागे

यह शहर कि जिसकी ज़िद है सीधी-सादी
ज्यादा-से-ज्यादा सुविधा सुख आज़ादी
तुम कभी देखना इसे सुलगते क्षण में
यह अलग-अलग दिखता है हर दर्पण में
साथियो, रात आयी, अब मैं जाता हूँ
इस आने-जाने का वेतन पाता हूँ
जब आँख लगे तब सुनना धीरे-धीरे
किस तरह रात-भर बजती हैं ज़ज़ीरें

-कवि केदारनाथ सिंह

अथवा

फर्नीचर

मैं उनको रोज झाड़ती हूँ
पर वे ही हैं इस पूरे घर में
जो मुझको कभी नहीं झाड़ते !
रात को जब सब सो जाते हैं-
अपने इन बरफाते पाँवों पर
आयोडिन मलती हुई सोचती हूँ मैं-
किसी जनम में मेरे प्रेमी रहे होंगे फर्नीचर,
कठुआ गये होंगे किसी शाप से ये !
मैं झाड़ने के बहाने जो छूती हूँ इनको,

आँसुओं से या पसीने से लथपथ-

इनकी गोदी में छुपाती हूँ सर-

एक दिन फिर से जी उठेंगे ये।

थोड़े-थोड़े से तो जी उठेंगे हैं।

गयी रात चूँ-चूँ-चूँ करते हैं:

ये शायद इनका चिड़िया का जनम हैं,

कभी आदमी भी हो जाएँगे,

जब आदमी ये हो जाएँगे,

मेरा रिश्ता इनसे हो जाएगा क्या

वो ही वाला-

जो धूल से झाड़न का?

-अनामिका

—X—